B.A. Part- I

हिन्दी रचना

विद्यापति की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

उत्तर - विद्यापति हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवियों में श्रेष्ठतम स्थान के अधिकारी हैं। जब हिन्दी भाषा अपनी जननी अपभ्रंश से अपना पृथक अस्तित्व बना रही थी उसी समय विद्यापति का हिन्दी साहित्य में आविर्भाव हुआ। इसीलिए उन्हें सन्धिकाल का कवि भी कहा जाता है। इनका जन्म मिथिला के अत्यन्त विद्वान एवं यशस्वी परिवार में सन् 1350 ई० में दरभंगा के बिस्फी नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता पंडित गणपति ठाकुर संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित एवं कवि थे। उन्हें महाराज कीर्तिसिंह का आश्रय प्राप्त था। इनका पूरा परिवार संस्कृत भाषा में निष्णात था। इसी परिवेश में पालित पोषित होने के कारण विद्यापति भी संस्कृत भाषा के विद्वान हुए किन्तु इन्होंने संस्कृत के साथ ही लोकभाषाओं का भी अनुशीलन परिशीलन किया। परम्परागत रूप से इन्हें भी मिथिला के राजदरबार का आश्रय प्राप्त हुआ। महाराज शिवसिंह, कीर्तिसिंह, धीरसिंह इत्यादि राजाओं की कृपा इन्हें प्राप्त हुयी। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी एवं अवहट्ट भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना की। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, भू परिक्रमा, वर्णकृत्य, शैवसर्वस्वसार, लिखनावली, गंगा पतलक, पुरुष परीक्षा, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, विद्यापति पदावली इत्यादि ग्रंथ प्रमुख हैं। इनके प्रस्तुत साहित्य ग्रंथों को देखकर इनकी विराट प्रतिभा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

विद्यापति की ख्याति में उनकी समस्त रचनाओं का प्रभाव है किन्तु उनकी लोकप्रियता एवं लोकहृदय का आधार-

उनकी पदावली है जो मिथिलांचल के
जन-जन का कंठहार है। इनकी पदावली का हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक महत्व है। रचना की दृष्टि से विद्यापति ने हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम गीतिकाव्य का प्रवर्तन किया जिसकी सुदीर्घ परम्परा आज भी जीवित है। मैथिली लिपि एवं बंगला से साम्य के कारण हाल के दिनों तक विद्यापति को बंगला भाषा का कवि माना जाता था। बाद के विद्वानों ने इन्हें हिन्दी के साहित्यकार के रूप में इनकी पहचान की।

विद्यापति का व्यक्तित्व विविधमुखी था। ठीक वैसे ही उनकी रचनाओं की भी स्थिति है। उनकी रचनाओं में श्रृंगार की प्रधानता, भक्ति का सहज अनुराग और अन्य विषयों को भी समाहित किया गया है।

इनकी श्रृंगारिक कविताओं में राधा-कृष्ण के प्रणय व्यापार का वर्णन अत्यंत स्थूल स्तर पर किया गया है राधा यहाँ आराध्या न होकर सामान्य नायिका तथा कृष्ण रस लोलुप सामान्य नायक के समान प्रेमी होते हैं। राधा के नख-शिख वर्णन में कवि की वृत्ति विशेष रूप से रमी है और उसने सौन्दर्य के अद्भुत चित्र प्रस्तुत किए हैं-

" शैशव यौवन दुहु मिलि गेल
श्रवणक पथ दुहु लोचन लेल।
जहां-जहां पद युग धरई
तहां-तहां सरोरुह भरई।" राधा-कृष्ण के मिलन के वर्णन में ऐसी अश्लीलता आ गयी है कि उसे परिवार के साथ नहीं पढ़ा जा सकता। किन्तु विरहिणी राधा - कृष्ण का वियोग वर्णन लौकिक न होकर लोकोत्तर हो गया है-

'अनुखन माधव- माधव सुमरइत
सुन्दरी भेल मधाई।" राधा कृष्ण का स्मरण करते-करते आत्मविस्मृत हो जाती है और स्वयं को कृष्ण

के रूप में देखने लगती है। लगता है ऐसे ही प्रसंगों के आधार पर विद्वानों के एक वर्ग ने इन्हें शृंगारिक कवि के रूप में खड़ा करा दिया है।